बाल - शिक्षण - माला : १

# बड़ों का बचपन

[ भारत के महापुरुषों के बचपन की झाँकियाँ ]

# दो शब्द
## [ शिक्षकों से निवेदन ]

बचपन जीवन के भवन की नींव है। इसके कच्ची या पक्की होने पर ही भवन का निर्बल या सबल होना निर्भर है। कोई व्यक्ति कैसे महान् होता है यह हम जानना चाहेंगे तो उसका बीज उसके बचपन में ही हमें मिलेगा। कौन सी ऐसी प्रेरणा थी जो जीवन में कार्यरूप में उतरी, कौन सा ऐसा बीज था जो बढ़कर वट का वृक्ष बन गया? कौन सी ऐसी शक्ति-किरण थी जो आगे जाकर ज्योति-पिण्ड बन गई? कौनसी ऐसी छाप थी जिससे जीवन ही बदल गया? कौन सी ऐसी घटना थी जिसने जीवन की धारा को ही मोड़ दिया? यह हमें बचपन में कहीं न कहीं दिखाई दे जायगा।

# — बच्चों से —

★

ारे बच्चो !

जैसे तुम बच्चे हो वैसे ही ये भी कभी बच्चे ही थे
जो मात्र बड़े कहलाते हैं। बड़े वे नहीं जो केवल तुम
बड़े हैं; बड़े वे हैं जो देश भर में बड़े कहलाये हैं; जिन
काम बड़े थे। इन बड़ों ने बचपन में क्या क्या कि
तुम जानना चाहोगे हो। इन कहानियों को पढ़ो
सोचो कि क्या तुम भी ऐसा ही करोगे। हो सकता है
कुछ तुम करना चाहो, कुछ न भी करना चाहो ?
पढ़ो तुमने समझ लिया तो मैं कहूँगा कि तुम स
अच्छे बच्चे हो।

अच्छे बच्चे बनना तो तुम चाहोगे ही।

तुम्हारा ही
दादा

देश के

नन्हे नौनिहालों

को

# क्या - कहाँ ?

उतना ही निर्दयी था। देवदत्त का मन भोले-भाले हाथियों और पक्षियों को तीर से मारने में खूब लगता था। इसी काम को वह अपनी वीरता समझता था। सिद्धार्थ तो क्षमा और दया की मूर्त्ति ही थे। उनके बचपन की एक कहानी आज हम तुम्हें सुनाते हैं।

एक दिन की बात है राजकुमार सिद्धार्थ अपने राजमहल के बगीचे में घूम-घूमकर आसपास की शोभा को देख रहे थे। नीले-नीले आकाश में हंसों की सफेद रंग की पंक्ति उड़ती हुई चली जा रही थी और बड़ी सुन्दर दिखाई दे रही थी। यह दृश्य सिद्धार्थ को इतना अच्छा लगा कि वे इसकी ओर इकटक देखते ही रह गये।

इतने में ही सिद्धार्थ ने क्या देखा कि धरती की ओर से जाता हुआ एक नुकीला तीर एक हंस की छाती में जा लगा और हंस दुःखभरी बोली में चिल्लाता हुआ धरती पर आ गिरा। वह तड़फड़ा रहा था और उसकी छाती से लाल-

लाल लहू की धार बह रही थी। ओह, कितना तीखा था वह तीर! बेचारे हंस की छाती के आर-पार होगया था!!

यह दृश्य देखकर वहाँ पर खड़े न रह सके सिद्धार्थ। वे तुरन्त दौड़े और तड़पते हुए हंस को अपने प्यारे-प्यारे कोमल हाथों में उठा लिया। हंस के दुःख को देखकर उन का हृदय भर आया और उनकी आँखों से टपटप बूंदें गिरने लगीं। वे रो रहे थे, सिसक रहे थे—कि पीछे से किसी के हँसने की आवाज सुनाई दी। यह बोली देवदत्त और उसके नटखट साथियों की थी। वह बोला—खबरदार, जो मेरे हंस को हाथ लगाया। यह मेरा शिकार है; मैंने अपने तीर से इसे गिराया है। देखो, कैसा अचूक तीर मारा! और देवदत्त एक बार फिर ठठा मारकर हँस पड़ा।

परन्तु सिद्धार्थ अब भी रो रहे थे; वे हंस को छाती से चिपटाये हुए थे। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा और वे बोले—यह हंस तुम्हारा कैसे? तुमने तो इसे

र डाला है । बेचारे की नन्ही सी जान तुमने ले डा
ा सिद्धार्थ अपने दुपट्टे से हंस का फव्वारे की
ता हुआ लोहू पोंछने लगे ।

इसपर देवदत्त ने क्रोध में आकर कहा—तुम्हें मेरा
स देना पड़ेगा क्योंकि इसे मैंने मारकर गिराया है । इ
र तुम्हारा अधिकार ही क्या है ? इसको मैं लेजाऊँगा ।

सिद्धार्थ आंखों में दुःख के आँसू भरे हुए बोले—
नहीं, यह हंस तुमको न मिलेगा । यह हंस मेरा है
क्योंकि मैंने इसको मारा नहीं है । मारनेवाले का यह कै
हो सकता है ? मैं इसकी मरहम-पट्टी करूंगा । शायद य
बच जाए ।

देवदत्त आगबबूला होकर वहां से चला गया अ
यह बात राजा के कान तक पहुँची । पिता ने दो
भाइयों को और हंस को राजसभा में बुलवाया । उन्होंने सा
कहानी सुनी और फिर कहा—सचमुच देवदत्त ने तो हंस

मारना चाहा था, परन्तु सिद्धार्थ ने इसको जिलाने का प्रयत्न किया है—इसलिए यह हंस देवदत्त का नहीं, सिद्धार्थ का होगा। मारनेवाले से जिलानेवाला बड़ा होता है।

★

: ८ :

# गुरु गोविन्दसिंह

यह तो तुम जानते ही होगे कि गुरु गोविन्दसिंह सिक्खों के गुरु थे। सिक्ख एक धर्म है जिसको गुरु नानक ने चलाया था। उसी धर्म में एक गुरु तेगबहादुर हुए और उन्हीं के बेटे थे गुरु गोविन्दसिंह।

जब ये उत्पन्न हुए थे तब इनके पिता का संकट-काल था। औरंगजेब बादशाह के विरोध में उन्होंने झण्डा ऊँचा किया था और वे इधर से उधर भाग-दौड़ करते

थे। जब इनके पिता आसाम की ओर जा रहे थे तो वे इनकी मां को पटना में छोड़ते गये। वहीं गुरु गोविन्दसिंह का जन्म हुआ था।

बालक गोविन्दसिंह का शरीर हृष्ट-पुष्ट था। वे बच्चों के दल के अगुआ रहते थे। इनका खेल यह था कि वे बच्चों के दो दल बनाते और उनमें झूठीमूठी लड़ाई कराते। जो दल जीत जाता उसके मुखिया को ये अपने गले से लगा लेते।

जब ये पाँच वर्ष के हो गये तो पिता ने इन्हें बुला लिया। इनकी रुचि युद्ध-कला में अधिक देखकर पिता ने इन्हें घोड़े पर चढ़ना और कुश्ती लड़ना, तीर-तलवार और भाला-ं सिखलाया। गोविन्दसिंह ने भी ये

ां।

झ में आ गई थी कि

हे।

जब ये नौ वर्ष के हुए तो एक अनहोनी बात हो गई।
इनके पिता ने इन्हें बुलाकर कहा—अब तक तो सिखों का
गुरु मैं था। आज से तुम इनके गुरु हुए। और ९ वर्ष
के बालक गोविन्दसिंह को गद्दी पर बैठा दिया।

उधर बादशाह ने गुरु तेगबहादुर को मरवा डाला।
जब गुरु गोविन्दसिंह के सामने उनके पिता का कटा हुआ
सिर लाया गया तो उन्होंने आँखों से आँसू टपकाते हुए
कहा—हाय पिता, तुम्हारी यह दशा! परंतु तुम धन्य थे
कि तुमने अपना सिर दिया परंतु धर्म नहीं दिया।

गुरु गोविन्दसिंह बड़े होकर सिक्खों के सच्चे गुरु
बने।

★★
★

: ३ :

# स्वामी दयानन्द

★

स्वामी दयानन्द भारत के बड़े नेता थे। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। इनके पिता श्री अम्बाशंकर जी शिवजी की पूजा किया करते थे। बचपन में एक ऐसी घटना हुई कि उसका इनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इनका जीवन ही बदल गया। वह घटना यह है—

बालक मूलशंकर को एक दिन शिवरात्रि का व्रत कराया गया। शिवालय में रात भर जागरण करने की बात

थी। छोटे से बालक के लिए यह बड़ा कठिन काम था।

वे शिवालय में बैठे-बैठे रात भर जागने का यत्न रहे थे। कभी वे ठंडे-ठंडे पानी के छींटे आंखों पर देते तो कभी खड़े हो जाते, परंतु फिर भी नींद आकर सताने लग जाती थी।

जब वे तंग हो उठे तो उन्होंने देखा कि एक चूहा भगवान् शंकर की मूर्ति पर आकर बैठ गया। शिवमूर्ति के आगे जो पूजा की सामग्री रक्खी हुई थी, वह उसी में से चावल के कुछ कण चुरा लाया था और वहाँ बैठकर खा रहा था।

बालक मूलशंकर अपने मन में सोचने लगे। उन्होंने सोचा—यह देवता जो अपने सिर से एक छोटे से चूहे को हटा नहीं सकता वह कैसा देवता ? और उसने क्या बड़े बड़े दैत्यों और दानवों को मारा होगा !

बालक मूलशंकर के मन में एक शंका घर कर गई।

वे पहुँचे अपने पिताजी के पास और उनको अपने मन की बात कह सुनाई।

पिता ने कहा—सच्चे भगवान शंकर तो रहते हैं कैलास पर्वत पर। यह शिवलिंग तो एक प्रतिमा है। आजकल कलियुग है और भगवान इस प्रकार दर्शन नहीं दिया करते।

उसी दिन से मूलशंकर के मन में बुद्धि आगई और वे समझ गये कि यह मूर्ति की पूजा करना एक ढोंग है। यह एक बीमारी है।

आगे जाकर मूलशंकर ऊँचे संन्यासी हुए और बड़े धर्मात्मा बने। उन्होंने 'आर्यसमाज' चलाया। आजकल आर्यसमाज सारे भारतवर्ष में फैला हुआ है।

# लोकमान्य तिलक

★

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारत में स्वराज्य
नींव डालनेवाले महापुरुष थे। तुम जानते होगे कि उन्हीं
यह कहा था कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है
इसका अर्थ यह है कि जन्म से ही हमको अपना राज
अपने आप करने का अधिकार मिला हुआ है। इसे को
छीन नहीं सकता।

बलवन्तराव इनका बालकपन का नाम था। बालक बलवन्तराव पढ़ने में बड़े अच्छे थे। एक बार पढ़ा हुआ हो उन्हें याद रह जाता था। वे कभी पाठ को रट्टू तोते की भाँति रटा नहीं करते थे। इसीलिए उनको रात को पाठ पढ़ने की जरूरत नहीं पड़ती थी। जब वे पढ़ने में लगे होते थे तो उसमें इतना ध्यान लगा लेते थे कि इनके कान के पास चाहे कोई नगाड़ा ही क्यों न बाजे, वे अपना मन डाँवाडोल नहीं करते थे।

पढ़ने में इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। इसकी एक कहानी हम सुनाते हैं। एक बार इनके अध्यापक जी ने इनको श्रुतलेख लिखवाया। उस श्रुतलेख में संत शब्द तीन बार आया। वे उसे तीन तरह से शुद्ध लिखना जानते थे। इसलिए तीनों तरह से उसे लिखा। क्या तुम जानते हो कि तीन तरह से यह शब्द कैसे लिखा जा सकता है?

देखो—(१) संत (२) सन्त (३) सन्‌त।

पहले में अनुस्वार ( बिन्दी ) है, दूसरे में आधा 'न' और तीसरे में हलन्त 'न'। यह भी एक प्रकार का आधा 'न' ही है।

जब इनके श्रुतलेख को अध्यापकजी ने जाँचा तो पहले को ठीक मानकर बाकी को काट दिया। यह बालक बलवन्त को अच्छा नहीं लगा क्योंकि उन्होंने तो शब्द को ठीक ही लिखा था। इसपर बलवन्त अड़े रहे और फिर उनके तीनों शब्द ठीक मान लिये गये।

: ५ :

# महात्मा गांधी

बालको, तुम यह तो जानते ही हो कि भारत को सदियों की पराधीनता से छुड़ानेवाले कौन थे ? वे थे महात्मा गांधी—जिन्हें हम 'राष्ट्रपिता' कहते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सारा संसार 'महात्मा' और सत्य का अवतार मानता है। वे छोटे थे तभी से सच्चाई का बीज उनके मन में था। यह छोटी सी कहानी तुम्हें यही बात बतावेगी।

उस समय गांधीजी छोटे ही थे। मोहनदास
नाम था और वे पढ़ते थे अपनी राजकोट की उच्च
शाला ( हाई स्कूल ) में।

एक बार पाठशाला की जाँच करने के लिए
इन्सपेक्टर ( शिक्षा-निरीक्षक ) आये। उन्होंने उनकी
कक्षा के विद्यार्थियों को ५ कठिन शब्द लिखवाये। इन
शब्दों से वह परीक्षा लेना चाहते थे। इन शब्दों में एक
शब्द था 'कैटिल'। इस शब्द का अर्थ होता है केतली
या देगची।

सब लड़के अपनी-अपनी कापियों पर यह शब्द
लिखने लगे। मोहनदास ने जहाँ लिखना चाहिये था
के- ई- टी- टी- एल- ई ( Kettle ), वहाँ लिखा
सी-ए-टी-टी-एल-ई ( Cattle )। पहले का अर्थ है केतली
( देगची ); दूसरे का अर्थ है गाय-बैल आदि जानवर।
इन्सपेक्टर का मतलब पहले शब्द से था।

जब इन्सपेक्टर ने देखा कि मोहनदास अशुद्ध शब्द लिख रहे हैं तो उन्होंने चुपके से अपने बूट की नोक से ठोकर देकर उन्हें अपनी भूल बतलाना चाहा। अध्यापकजी

परन्तु सीधे सादे मोहनदास ये इशारे क्या समझते
वह कल्पना भी न कर सकते थे कि अध्यापक इस प्रकार
लड़कों की भूल को छिपाने का धोखा करेंगे । पहले
मोहनदास समझे कि भूल से ठोकर लग गई होगी
क्योंकि उनका काम तो यह देखभाल करना था कि लड़के
एक दूसरे की नकल न कर लें ।

मोहनदास अध्यापकजी की चालाकी नहीं समझे
और उनको छोड़कर और सब लड़कों ने शब्द को
शुद्ध लिख डाला ।

बात तो यह छोटी सी ही है परन्तु यह बतलाती है
मोहनदास सच्चाई के पक्के थे और झूठ का आसरा
नहीं लेते थे । नकल करना तो एक चोरी है ।

★

इसी प्रकार की एक दूसरी घटना स्मरण रखने योग्य है। छोटे-छोटे नासमझ लड़कों को बुरी संगति से कई प्रकार की बुरी आदतें पड़ जाती हैं। मोहनदास के साथ भी ऐसा ही हुआ। जब वे विद्यार्थी थे तो दूसरे बीड़ी-सिगरेट पीनेवाले लड़कों की देखादेखी इन्हें भी बीड़ी पीने का चाव हुआ। लड़कों को मुँह से धुआँ उड़ाते देख कर उन्हें अच्छा लगता था।

परन्तु कठिनाई यह थी कि बीड़ी लाते कहाँ से? क्योंकि पैसे उनके पास थे नहीं कि बाजार से बीड़ी मोल लेते।

उनके चाचा बीड़ी-सिगरेट पिया करते थे। जो बीड़ी-सिगरेट पीते-पीते छोटी रह जाती है वह फेंक दी जाती है। बालक मोहनदास इन रद्दी टुकड़ों को जला-जलाकर पीने

लगे। परन्तु जली हुई बीड़ी-सिगरेट के टुकड़े कहाँ चलते? परन्तु चसका तो लग ही गया था।

अन्त में उन्होंने नौकर-चाकरों की जेब से पैसे उड़ा कर बीड़ी-सिगरेट मोल लेना और पीना शुरू किया। पर उन्हें रखते कहाँ? बड़ों के सामने पीना भी तो बुरा होता है। लत धीरे-धीरे बढ़ती ही गई। जब पैसों की चोरी से काम न चलते देखा तो इन्होंने एक बड़ी चोरी कर डाली। कुछ रुपया उधार हो गया था उसे चुकाना था।

वह चोरी थी अपने भाई के सोने के कड़े से सोने की। ये कड़े मोटे और ठोस सोने के थे, उसमें से एक छोटा सा टुकड़ा काटने में क्या लगता था? उसे बेचकर उधार रुपया चुका दिया गया।

पर इस चोरी का इतना पछतावा बालक मोहनदास को हुआ कि वे चुप न रह सके। उनका मन उनको भला-बुरा कहने लगा और वे व्याकुल होगये। उन्होंने अन्त में

: ६ :

# वि रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्र सात-आठ वर्ष के बालक होंगे। उनके एक भानजे उनसे उम्र में बड़े थे और अंग्रेज़ी की पुस्तकें पढ़ चुके थे। वे कविता लिखने की रीति जानते थे। एक दिन अचानक उन्होंने रवीन्द्र को अपने कमरे में बुलाकर कहा—तुम्हें कविता लिखनी होगी। और फिर बंगला में चौदह अक्षर जोड़ जोड़ कर कविता बनाना भी सिखा दिया। बालक रवीन्द्र को यह बड़ा अच्छा लगा।

अब तक रवीन्द्र ने कवितायें पुस्तकों में ही छपी देखी थीं। वे यह सोचते तक नहीं थे कि ये इस तरह शब्द जोड़ जोड़ कर बनाई जाती हैं। और न यह समझते थे कि हम जैसे ही मनुष्यों ने ये कवितायें लिखी होंगी।

यह दुख इस बात का था कि उसमें शब्दों की अच्छी मरम्मत हो गई थी। उन्हें एक बात की याद आ गई। एक बार उनके घर में चोर पकड़ा गया था। जब चौकीदार ने उसे मारना शुरू किया तो उससे बालक रवीन्द्र को बड़ी चोट पहुँची थी। ऐसी ही चोट उन्हें शब्दों की तोड़-मोड़ से होने लगी।

यह सब होते हुए भी हम यह तो देखते ही हैं कि रवीन्द्रनाथ बचपन में अपने आप किस प्रकार कविता लिखने लग गये थे।

( २ )

पाठशाला में तो इनके अध्यापक इन्हें सताते ही थे। एक दिन अध्यापक ने इन्हें कई घण्टों कड़ी धूप में खड़ा रक्खा। जब इनके पिताजी ने यह सुना तो उन्होंने तुरन्त इन्हें स्कूल से हटा लिया।

एक बार पिताजी ने बालक रवीन्द्र से गीत गाने को

पढ़ा। रवीन्द्र ने अपनी ही बनाई हुई एक कविता गाकर सुनाई।

कविता सुनते ही पिता आनन्दित हो उठे और बोले–यदि बंगाल में कोई बंगला जाननेवाला राजा होता तो तुम्हें पुरस्कारों से लाद देता।

फिर भी उन्होंने बालक रवीन्द्र को निराश नहीं किया। तुरन्त रवीन्द्र के नाम रुपयों का एक चेक काट दिया!

पुत्र को पिता के द्वारा इस प्रकार बढ़ावा मिलने से पुत्र का हृदय सौ गुना फूल उठा होगा।

एक बार कविता लिखने का चाव हो गया तो फिर वे लिखते ही गये, लिखते ही गये और कविताओं के ढेर लगा दिये।

यह तो तुम जानते ही होगे भारत का राष्ट्र गान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता!'

रवीन्द्र का ही लिखा हुआ है।

रवीन्द्र भारत के ही नहीं संसार के सबसे बड़े कवि कहलाये।

# राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद

★

भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी हैं। बचपन से ही वे सीधे-सच्चे और सुशील थे। पढ़ने में बहुत ही अच्छे, परिश्रमी और शांत स्वभाव के थे। बड़े होने पर वे देश-भक्त हुए, त्यागी हुए, देश के नेता हुए और अब 'राष्ट्रपति' हैं। उन्होंने अपने जीवन की कहानी पुस्तक के रूप में लिखी

है। अपने बचपन की बात उन्होंने इस प्रकार सुनाई है। सो सुनो —

"माता और दादी मुझे बहुत प्यार करतीं। बचपन से ही मेरी आदत थी कि मैं संध्या को बहुत जल्द सो जाता था और उधर कुछ रात रहते ही, बहुत सवेरे ही जाग जाता था। घर पक्का था। पर बनाया पुराने तरीके पर। बीच में आँगन और चारोंओर ओसारे और कमरे। कमरों में एक दरवाजा और छप्पर के नजदीक हर कमरे में एक या दो छोटे-छोटे रोशनदान।

जाड़ों में खास करके, लम्बी रात होने के कारण, रात रहते ही नींद टूट जाती और उसी समय से माँ को भी मैं सोने नहीं देता। रजाई के भीतर ही उनको जगाता। वह जागकर पराती (प्रभाती) का भजन सुनाती। कभी कभी रामायण इत्यादि की कथाएँ भी सुनाती। उन भजनों और कथाओं का असर मेरे दिल पर बहुत पड़ता।

इसी प्रकार तब तक रोशनदान में बाहर की रोशनी नजर नहीं आती, पड़ा रहता और माँ से भजन गवाता रहता या कथा कहलाता रहता।"

प्यारे बच्चो, क्या तुम भी अपने प्यारे राष्ट्रपति ( राजेन्द्र बाबू ) की भाँति माँ से कथा-कहानी और भजन-गान सुनने की इच्छा किये करते हो सवेरे-सवेरे ?

•

# जवाहरलाल नेहरू

★

जानते हो बच्चो, आज-कल हमारे देश के सबसे बड़े नेता कौन हैं ? तुम कहोगे राजेन्द्रप्रसाद, जो 'राष्ट्रपति' हैं। परन्तु कई बातों में उनसे भी बढ़े-चढ़े हैं पंडित जवाहरलाल नेहरू। ऐसा कौन बालक होगा जो जवाहर लाल का नाम न जानता होगा, उनका सुन्दर चित्र न पहचानता होगा ? वे बड़े प्यारे, बड़े नामी नेता हैं। अपने

देश के बाहर भी दूर-दूर तक उनका नाम पहुँच गया है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तो यहाँ तक कह दिया था कि मेरे पीछे भारत का बागडोर हाथ में लेनेवाले जवाहरलाल ही होंगे। आज वे हमारे 'प्रधान मंत्री' हैं।

गांधीजी ने उनके विषय में सच ही कहा था कि जवाहरलाल का चरित्र स्फटिक की भाँति निर्मल और सोने की भाँति शुद्ध है। वास्तव में हमारे नेहरूजी हैं भी ऐसे ही।

अब इन के बचपन की कहानी सुनो।

जवाहरलाल एक बड़े धनी परिवार के हैं। इनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू इलाहाबाद के नामी बैरिस्टर थे। इनका 'आनन्द-भवन' जिसमें जवाहरलाल रहा करते थे, एक राजमहल से कम नहीं था। पं. मोतीलाल राजसी ढंग से ही रहते थे। खान पान और रहन सहन भी अंग्रेजों के जैसा था। एक बार इन्हें [illegible]

अपने मित्र-मण्डली में बैठे शराब पी रहे थे। उस शराब का रंग लाल था। बालक जवाहर ने इस रंग की शराब

नहीं देखी थी। वे इस लाल-लाल चीज को पीते देखकर

चक रह गये। वे दौड़े-दौड़े अपनी माँ के पास गये
!! बोले–माँ, माँ, देखो तो पिताजी खून पी रहे हैं।
लक जवाहरलाल शराब को खून समझ गये थे।

( २ )

अब एक दूसरी घटना सुनो। बालक जवाहरलाल ने,
वे ५-६ वर्ष के थे, एक दिन अपने पिताजी की मेज
दो फाउण्टेन पैन देखे। फाउण्टेन पैन तुम जानते हो
। ऐसी कलम होती है जिसमें स्याही भर दी जाती है
: बारबार कलम को स्याही में डुबाये बिना लिख सकते
। झरने की तरह स्याही बहती रहने के कारण ही इसे
उण्टेन पैन' ( झरना-कलम ) कहते हैं।

बालक जवाहर ने सोचा–पिताजी दो झरना कलम
रे पास तो एक भी नहीं है।
क्या बुराई है ? बस उनका
उनमें से एक कलम अपनो

अपनी मित्र-मण्डली में बैठे शराब पी रहे थे । उस शरा
का रंग लाल था । बादशाह जहांगीर ने इस रंग को शरा

अब जवाहर की बहादुरी की कहानी सुनिए। ६-७
र्ष के थे जवाहर। वे नित्य घुड़सवारी करने जाया करते
इनके साथ निगरानी के लिए एक सवार भी रहता
। एक दिन जवाहर घोड़े से गिर पड़े और उनका
अकेला ही रह गया। वह अच्छा जानवर था, इस-
तुरन्त खाली घर लौट आया। जवाहर के पिताजी
ा खेल रहे थे। जब उन्होंने यह देखा तो बड़े
गये। सब लोग जवाहर की खोज के लिए चल दिये।
जी आगे आगे, और सब उनके पीछे पीछे। अन्त
ामने से आते हुए जवाहरलाल मिल गये। जवाहर
लिखते हैं कि पिताजी ने मेरा इस तरह स्वागत
मानों मैंने कोई बड़ी बहादुरी का काम किया हो।

अब जवाहर के पिताजी अपनो नेत्र पर काम करने उठे तो यहाँ एक दो कलम देखा। अब तो वे उसे खोजने लगे। घर भर में पूछताछ हुई। जवाहर से भी पूछा पर डर के मारे इन्होंने बताया नहीं। पर अच्छी तरह खोज हुई तो कलम इन्हीं के पास मिल गया। अब तो जवा अपराधी बनाये गये। पिताजी तो लाल हो ही रहे थे

वे जवाहर को पकड़कर बेंत से इनकी पिटाई करने लगे। उन्होंने इनको इतना पीटा कि इनकी पीठ पर फफ उठ आये। दर्द के कारण जवाहर कई दिन कष्ट रहे और कई दिन उनके घावों पर क्रीम और म लगाया गया। इस दण्ड से भी जवाहर यही सोच कि उनको अपनी करनी का फल मिला है और पि

अब जवाहर की बहादुरी की कहानी सुनिए। ६-७ वर्ष के थे जवाहर। वे नित्य घुड़सवारी करने जाया करते थे। इनके साथ निगरानी के लिए एक सवार भी रहता था। एक दिन जवाहर घोड़े से गिर पड़े और उनका टट्टू अकेला ही रह गया। वह अच्छा जानवर था, इसलिए तुरन्त घर वालों पर लौट आया। जवाहर के पिताजी टैनिस खेल रहे थे। जब उन्होंने यह देखा तो बड़े घबराये। सब लोग जवाहर की खोज के लिए चल दिये। पिताजी आगे आगे, और सब उनके पीछे पीछे। अन्त में सामने से आते हुए जवाहरलाल मिल गये। जवाहरलाल लिखते हैं कि पिताजी ने मेरा इस तरह स्वागत किया मानों मैंने कोई बड़ी बहादुरी का काम किया हो।

जवाहरलाल दस साल के थे तो उनकी छोटी [illegible] जन्म हुआ था। वे बड़े [illegible] [illegible]

बात की बाट जोह रहे थे कि कोई आकर कहे कि उनके भाई हुआ है या बहिन हुई है। इतने में ही एक डाक्टर ने आकर कहा— लो, तुमको प्रसन्न होना चाहिए कि तुम्हारे भाई नहीं हुआ, बहिन हुई है। यदि भाई होता तो तुम्हारी जायदाद में हिस्सा बँटा लेता।

उसने तो हँसी में ही कहा होगा पर जवाहरलाल को यह बात बड़ी चुभी और उन्हें इस बात पर झुँझलाहट भी आई कि कोई उन्हें इतना बुरा समझता है कि भाई होने पर वे प्रसन्न नहीं होते।

: ९ :

# सरदार पटेल

★

बालको ! तुम जानते हो कि सरदार वल्लभभाई हमारे देश के बड़े नेताओं में से एक थे। वे भारत के उपप्रधान मंत्री थे। उनका जीवन बड़ा रहा था। आज उनके बचपन की एक घटना सुनो।

उनके विद्यालय में संस्कृत भाषा जिस तरह पढ़ाई

...र नहीं आता था, इसलिए

इस डर से वल्लभभा...

ने संस्कृत छोड़कर गुजराती ले ली। गुजराती पढ़ाने वाले मास्टर छोटालाल ने सुना तो वे उनसे बोले—आइए, महापुरुष ! ओहो, आप हैं जो संस्कृत छोड़कर गुजराती लेते हैं ! अजी संस्कृत के बिना गुजराती कभी आ सकती है ?

वल्लभभाई को यह बात लग सी गई। वे तुरन्त बोले-यह तो ठीक है गुरुजी ! परन्तु हम सब संस्कृत ही पढ़ते तो आप किसे पढ़ाते फिर ? इसपर शिक्षकजी बड़े बिगड़े और डाँटकर कहा—महापुरुष, जाइए ! और एक से लेकर दस तक के पहाड़े लिख कर लाइए। वल्लभभाई चुप रह गये।

अब वल्लभभाई को एक दिन हुआ, दो दिन हुए, परन्तु वे पहाड़े लिख न सके। प्रतिदिन वे कोरे खड़े हो जाते और गुरुजी दण्ड देते—जाओ, कल दो बार लिखना, कल चार बार, कल आठ बार। बढ़ते-बढ़ते दो सौ पहाड़े

अब वल्लभभाई करें तो क्या करें ? अंत में एक दि
मास्टर साहब बिगड़ ही तो उठे । कहने लगे लाल आँ
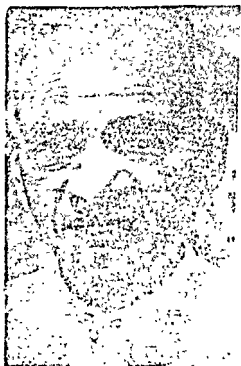
करके—पहाड़े लिखकर लाना है कि नहीं ! नहीं तो और

कड़ा दण्ड दिया जायगा।

वल्लभभाई तेज स्वभाव के थे। बड़े चालाक भी थे। बोले—मास्टर साहब, दो सौ पाड़े लाया तो था। मास्टर साहब समझे, अवश्य यह पहाड़े लिखकर लाया होगा। परंतु वल्लभभाई ने आगे ही कह डाला—परन्तु मास्टर साहब, उन पाड़ों में से एक ऐसा मारखना निकला कि सबके सब उससे बिदक कर भाग खड़े हुए; मैं क्या करूँ!

अब मास्टर साहब समझे कि वल्लभ तो पाड़े (भैंस के बच्चे) की बात बना रहा था। उधर सब लड़के एक साथ हँस पड़े। बच्चो, तुमको भी हँसी आगई होगी।

वल्लभभाई के जीवन की इस बात से उनकी उद्दण्डता टपकती है। यदि वल्लभभाई में गुण न होते तो उनकी इस शरारत को कौन याद करता! वे कई गुणों के घर थे, इसलिए उनकी यह शैतानी भी आज याद की जाती है।

उस पाठशाला के मास्टर साहब ने जो चिढ़ाते हुए 'महापुरुष' कहा था—वह आगे जाकर सच ही होगया और वल्लभभाई सचमुच एक महापुरुष बने। गुरु का वह चिढ़ाना ही शिष्य के लिए आशीर्वाद हो गया।

. .

फ.डा दण्ड दिया जायगा।

वल्लभभाई तेज स्वभाव के थे। बड़े शौकीन भी थे। बोले—मास्टर साहब, दो सौ पाड़े लाया तो था .. मास्टर साहब समझे, अवश्य यह पहाड़े लिखकर लाया होगा। परंतु वल्लभभाई ने आगे ही कह डाला—परन्तु मास्टर साहब, उन पाड़ों में से एक ऐसा मरखना निकला कि सबके सब उससे बिदक कर भाग खड़े हुए; मैं क्या करूँ !

अब मास्टर साहब समझे कि वल्लभ तो पाड़े ( भैंस के बच्चे ) की बात बना रहा था। उधर सब लड़के एक साथ हँस पड़े। बच्चो, तुमको

उस समय जमनालाल छोटे ही थे, बारह–तेरह वर्ष के। उनके दादा बच्छराजजी चाहते थे कि जमनालाल उनके कामकाज को सीख लें। दुकान पर बैठने में उनका मन नहीं लगता था। बालक का स्वभाव धन कमाने का था ही नहीं। दादाजी ने एक उपाय सोचा। उन्होंने जमनालाल से कहा, दूकान पर बैठने का नित्य एक रुपया तुम्हें मिला करेगा।

जमनालाल दूकान पर बैठते और नित्य एक रुपया उन्हें मिलता। यह उनका जेब–खर्च था।

उन्हीं दिनों नागपुर से हिन्दी का एक समाचार (अखबार) 'हिन्दी केसरी' नाम का
था। यह तिलक महाराज का पत्र था। पर पत्र
के लिए पहले लोगों से धन माँगा जा रहा था।

जमनालाल पत्र पढ़ा करते थे। उन्हें भी यह बात मालूम पड़ी। उन्होंने पत्र के लिए चन्दे की सहायता देने

: १० :

# जमनालाल बजाज

★

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी वर्धा में रहा करते थे। जानते हो, उन्हें वर्धा कौन ले गया था? साबरमती (अहमदाबाद) से सेवाग्राम (वर्धा) में उनको खींच लेने वाले थे सेठ जमनालालजी बजाज।

जमनालालजी राष्ट्र के एक बड़े सेवक और नेता हुए हैं। उनके बचपन की एक कहानी सुनो।

: ११ :

# 'नेताजी'

★

बालको, तुमने अपने साथियों को 'जयहिन्द' हुए सुना ही होगा। जानते हो यह का अभिवादन चलाने वाले कौन थे? वे 'नेताजी'। 'नेताजी' वो वे इसलिए कहलाते कि उन्होंने अपने देश को अंग्रेजों के पंजे से छुड़ाने के लिए एक बहुत बड़ी सेना बनाई थी।

का विचार कर लिया। उन्होंने अपने बचाये हुए रुपयों में से एक सौ रुपये तुरंत 'हिन्दी केसरी' के लिए भेज दिये।

एक छोटे बालक के लिए यह कितनी ऊँची भावना थी! बड़े होने पर वे कहा करते थे—उस समय सौ रुपये देकर मुझे जो आनन्द मिला, वह अब लाखों देकर भी नहीं मिल सकता।

: ११ :

# 'नेताजी'

★

बालको, तुमने अपने साथियों को 'जयहिन्द' कहते हुए सुना ही होगा। जानते हो यह अभिवादन चलाने वाले कौन थे? वे थे 'नेताजी'। 'नेताजी' तो वे इसलिए कहलाते कि उन्होंने अपने देश को अंग्रेजों के पंजे से छुड़ाने के लिए एक बहुत बड़ी सेना बनाई थी।

का विचार कर लिया। उन्होंने अपने बचाये हुए रुपयों में से एक सौ रुपये तुरंत 'हिन्दी केसरी' के लिए भेज दिये।

एक छोटे बालक के लिए यह कितनी ऊँची भावना थी! बड़े होने पर ये कहा करते थे—उस समय सौ रुपये देकर मुझे जो आनन्द मिला, वह अब लाखों देकर भी नहीं मिल सकता।

: ११ :

# 'नेताजी'

★

बालको, तुमने अपने साथियों को 'जयहिन्द' क...
र सुना ही होगा । जानते हो यह ...
। अभिवादन चलाने वाले कौन थे ? वे
ताजी' । 'नेताजी' वो वे इसलिए कहलाते
क उन्होंने अपने देश को अंग्रेजों के पंजे से
ड़ाने के लिए एक बहुत बड़ी सेना बनाई थी ।

...का स्वीकार कर लिया। उन्होंने अपने बचाये हुए रुपयों में
...से एक सौ रुपये तुरंत 'हिन्दी केसरी' के लिए भेज दिये।
एक छोटे बालक के लिए यह कितनी ऊँची भावना
...थी! बड़े होने पर वे कहा करते थे—उस समय भी
...रुपये देकर मुझे जो आनन्द मिला वह सब लाखों
...देकर भी नहीं मिल सकता।

: ११ :

# 'नेताजी'

★

बालको, तुमने अपने साथियों को 'जयहिन्द' कहते हुए सुना ही होगा। जानते हो यह 'जयहिन्द' का अभिवादन चलाने वाले कौन थे? वे 'नेताजी'। 'नेताजी' तो वे इसलिए कहलाते कि उन्होंने अपने देश को अंग्रेजों के पंजे से छुड़ाने के लिए एक बहुत बड़ी सेना बनाई थी।

का विचार कर लिया। उन्होंने अपने बचाये हुए रुपयों में से एक सौ रुपये तुरंत 'हिन्दी केसरी' के लिए भेज दिये।

एक छोटे बालक के लिए यह कितनी ऊँची भावना थी ! बड़े होने पर वे कहा करते थे—उस समय सौ रुपये देकर मुझे जो आनन्द मिला, वह अब लाखों देकर भी नहीं मिल सकता।

: ११ :

# 'नेताजी'

बालको, तुमने अपने साथियों को 'जयहिन्द' क
हुए सुना ही होगा । जानते हो यह '
का अभिवादन चलाने वाले कौन थे ?
'नेताजी' । 'नेताजी' वो वे इसलिए कहला
कि उन्होंने अपने देश को अंग्रेजों के पंजे
छुड़ाने के लिए एक बहुत बड़ी सेना बनाई

का विचार कर लिया। उन्होंने अपने बचाये हुए रुपयों में से एक सौ रुपये तुरंत 'हिन्दी केसरी' के लिए भेज दिये।

एक छोटे बालक के लिए यह कितनी ऊँची भावना थी ! बड़े होने पर वे कहा करते थे—उस समय सौ रुपये देकर मुझे जो आनन्द मिला, वह अब लाखों देकर भी नहीं मिल सकता।

सेवा किया करते थे । एक बार इन्होंने यह सोच डाला कि मैं जन्म भर विवाह नहीं करूँगा और देश की सेवा करूँगा ।

एक दिन इन्होंने सोचा—संसार के बन्धन में पड़े रहने से भला नहीं होगा । कोई अच्छा गुरु मिल जाये तो वही अच्छा रास्ता दिखाए। बस, गुरु की खोज में ये घर-बार और पढ़ना-लिखना छोड़कर जंगलों और पहाड़ों में साधु-संतों की खोज करते रहे । काशी, गया, हरिद्वार सभी तीर्थ घूम-घाम कर भी ये सच्चा साधु न पा सके और फिर घर लौट आये ।

इसके बाद इन्होंने अपना जीवन मन लगा

उस सेना का नाम था 'आज़ाद हिन्द फौज'। फ़ौज के सिपाही और सरदार—हिन्दू और मुसलमान, स्त्री और पुरुष उन्हें बड़ा प्यार करते थे और उन्हें 'नेताजी' कहते थे। 'दिल्ली चलो' उस सेना का नारा था।

बचपन से ही नेताजी बालकों के अगुआ रहते थे। ये दब्बू नहीं थे। ये दबना नहीं जानते थे।

इनके बचपन की कहानी भी साधारण नहीं है। बचपन में इन पर साधु-सन्तों के विचारों की छाप पड़ने लगी थी। ये सोचा करते थे कि संसार में सरल और ऊँचा जीवन बिताना चाहिए।

जो गरीब और लूले-लँगड़े होते उनकी ये

सेवा किया करते थे । एक बार इन्होंने यह सोच डाला कि मैं जन्म भर विवाह नहीं करूँगा और देश की सेवा करूँगा ।

एक दिन इन्होंने सोचा—संसार के बन्धन में पड़े रहने से भला नहीं होगा । कोई अच्छा गुरु मिल जाये तो वही अच्छा रास्ता दिखाए। बस, गुरु की खोज में ये घर-बार और पढ़ना-लिखना छोड़कर जंगलों और पहाड़ों में साधु-संतों की खोज करते रहे । काशी, गया, हरिद्वार सभी तीर्थ घूम-घाम कर भी ये सच्चा साधु न पा सके और फिर घर लौट आये ।

इसके बाद इन्होंने अपना जीवन मन लगा

कर पढ़ने-लिखने, योग्य बनने और देश के लि
तन—मन जुटा देने में ही लगा दिया। देश के लि
ही 'निशानी' मन्त्र में शहीद भी हो गये।